**ओ३म्**

**‘वेद प्रचार ही श्रेष्ठ मानव निर्माण और देश व समाज की रक्षा का आधार’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 सभी माता, पिता व आचार्य चाहते हैं कि उनकी सन्तानें व शिष्य आदि श्रेष्ठ मनुष्य बनें। वेद ने भी लगभग दो अरब वर्ष पहले कहा **‘मनुर्भव’** अर्थात् हे मनुष्य, तू श्रेष्ठ मनुष्य बन। मनुष्य बनने से वेद का क्या अभिप्राय है? मननशील व्यक्ति ही मनुष्य कहा जाता है। जो मनुष्य मनन न कर सत्य व असत्य के विवेक से हीन है वह मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं होते। आजकल हम देख रहे हैं कि मनुष्य अपने निजी जीवन में परम्परागत रूप से मानी जानी वाली बातों को ही बिना मनन व चिन्तन किये स्वीकार कर लेते हैं और उसी में अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। वह समझते हैं कि उनकी परम्परायें सत्य व अनुभवों पर आधारित हैं परन्तु उन्हें यह पता नहीं होता कि हमारी सभी परम्परायें व मान्यतायें प्राचीन न होकर कुछ प्राचीन व अधिकांशतः मध्ययुगीन वा मध्यकालीन हैं। मध्यकाल का अर्थ है कि घोर अज्ञान का युग। यह युग महाभारत काल के कुछ हजार वर्षों बाद आरम्भ हुआ। हुआ यह कि महाभारत काल में विद्वानों एवं वीर योद्धओं के मारे जाने से देश व समाज में अव्यस्था फैल गई थी जिसका परिणाम यह हुआ कि शनैः शनैः अन्धकार बढ़ने लगा और ऐसा युग आया जो घोर अन्धकार का युग था। इस अंधकार के युग को ही मध्यकाल कहा जाता है। इस युग में ही वेदानुसार की जाने वाली निराकार ईश्वर की उपासना का स्थान साकार पाषाण व धातु की मूर्तियों ने ले लिया। इसके लिए ईश्वर के अवतार की कल्पना की गई। इसके लिए भी इतिहास के ग्रन्थों रामायण व महाभारत से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व योगेश्वर श्री कृष्ण के पावन चरितों को लेकर उन्हें ईश्वर का अवतार घोषित कर दिया गया। महाभारतकाल के कुछ ही काल बाद ऋषि परम्परा के समाप्त हो जाने के कारण अज्ञानियों व स्वार्थी लोगों को चुनौती देने वाले लोग नहीं थे। अतः वह जो कल्पना कर लेते थे वही मत व मान्यता अथवा सिद्धान्त बन जाता था। इसी प्रकार मूर्तिपूजा, अवतारवाद सहित मृतक श्राद्ध और फलित ज्योतिष एवं भाग्यवाद का भी आरम्भ देश व समाज में हो गया। कालान्तर व इसी समय जन्मना जातिवाद का प्रचलन हुआ। समाज में जो ज्ञान से रहित सेवा कर्म करने वाले कर्मणा शूद्र थे उन्हें अस्पश्र्य बना दिया गया और उनके बच्चों व स्त्रियों को शिक्षा व वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। ऐसा लगता है कि यह सब कुछ मध्यकाल के स्वार्थी लोगों ने अपनी आजीविका व स्वार्थों के कारण किया जिस पर विचार कर विद्वान अपने अपने निष्कर्ष निकाल सकते हैं। ऐसे ही अज्ञान व अन्धकार के समय में संसार के सभी मत अस्तित्व में आये जिनमें अविद्या भरी हुई है। सभी मतों की अविद्या को दूर किया जाना आवश्यक है अन्यथा मनुष्य अनावश्यक व अविद्यायुक्त व्यवहार व आचरण करके अपनी व देश एवं समाज की हानि करते रहेंगे। इस अविद्या के नाश व विद्या की वृद्धि के लिए महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार, आर्यसमाज की स्थापना व शास्त्रार्थ आदि कार्यों को किया था। उनका आन्दोलन अनेक कारणों से सफल नहीं हुआ जिस कारण संसार में सर्वत्र अशान्ति, दुःख व क्लेश दृष्टिगोचर हो रहे हैं और किसी के पास इनका समाधान नहीं है।

 श्रेष्ठ मानव निर्माण की देश व समाज को आवश्यकता क्यों हैं? इसका उत्तर है कि देश के नागरिक जितने अधिक सत्य विद्याओं में शिक्षित, सभ्य, सुस्कृतज्ञ एवं श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव वाले होंगे उतना ही उन मनुष्यों के अपने हित में होगा और उनसे देश व समाज को भी अपूर्व लाभ होगा जो साधारण, अशिक्षित, सामान्य गुणों वालों व विपरीत गुणों, अवगुणों व बुरे कामों को करने वाले नागरिकों व मनुष्यों से देश व समाज को प्राप्त नहीं होता। मनुष्य श्रेष्ठ गुणों से युक्त होता है तो उसको मानसिक सुख व शान्ति, सन्तोष एवं प्रसन्नता आदि गुणों का लाभ होता है। इसके विपरीत सद् गुणों से रहित मनुष्य सुखी व प्रसन्न नहीं हो सकता। ऋषियों व विद्वानों ने विवेचना कर निष्कर्ष निकाला है कि संसार में सबसे अधिक मूल्यवान ज्ञान है न कि धन दौलत आदि वस्तुयें। ज्ञानवान मनुष्य ज्ञान से धन व दौलत अर्जित कर उसका सदुपयोग कर स्वयं व दूसरों को लाभ पहुंचाता है जबकि अज्ञान से युक्त व्यक्ति का धन दौलत आदि प्राप्त करना ही कठिन है और यदि वह संग्रह कर भी ले तो वह दूसरे पात्र मनुष्यों में उसका वितरण न कर परिग्रही होकर देश व समाज के लिए अहितकर होता है। ऐसा ही आजकल हो रहा है जिससे देश व समाज कमजोर हो रहे हैं। अतः मनुष्यों का श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से युक्त होना मनुष्य के अपने हित के साथ देश व समाज के हित में भी होता है।

 मनुष्यों को श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभावों से युक्त करने के उपाय क्या हैं? इसका सर्वोत्तम उपाय यह है कि उसे वैदिक शिक्षा व संस्कारों में दीक्षित करना। वैदिक संस्कारों से दीक्षित मनुष्य सत्य का आचरण करेगा, ईश्वर का उपासक होगा, परोपकारी, दानी, देशभक्त, गोभक्त, मांसाहार का विरोधी, पशु हिंसा का विरोधी, गुणग्राहक, विद्याविलासी, माता-पिता-आचार्यों आदि का आदर व सम्मान करने वाला, संयमी, निर्लोभी, अपरिग्रही, यज्ञप्रेमी, पृथिवी को माता मानने वाला आदि अनेकानेक गुणों से सम्पन्न होता है। इसके विपरीत हम समाज के लोगों को इन गुणों से रहित अथवा न्यून गुणों वाला पाते हैं। इसी कारण समाज में अशान्ति व नाना समस्यायें विद्यमान हैं। इनका समाधान एक मात्र वैदिक शिक्षा व संस्कारों के प्रचार प्रसार व अध्ययन-अध्यापन से ही हो सकता है न कि किसी मत व सम्प्रदाय की शिक्षा व मान्यताओं के आधार पर। अतः देश व समाज के शिक्षाविदों व नीति निर्धारकों को इस विषय में निष्पक्षता व निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर विचार करना चाहिये। इसी में उनका व देश का हित के साथ हमारी भावी पीढ़ियों का भी हित है।

 हम यह भी अनुभव करते हैं कि नई पीढ़ी को इस बात की शिक्षा दी जानी चाहिये कि वह अपने जीवन में किसी भी बात को बिना मनन व विचार किये स्वीकार न करें, भले ही वह धार्मिक मान्यता ही क्यों न हो। इसी प्रकार से सभी सामाजिक मान्यताओं पर भी गम्भीरता के साथ मनन व चिन्तन करके ही स्वीकार करना चाहिये और उसी का आचरण करना चाहिये। जो व्यक्ति निर्णय न कर सकें वह ऐसे व्याक्तियों की तलाश करें जो निष्पक्ष एवं साम्प्रदायिक विचारों व परम्पराओं से मुक्त, सत्य के प्रेमी व देश हितैषी हों। अपने अपने मत के प्रति समर्पित होना व उसके अहितकारी कार्यों व विचारों को भी मानना धर्म व पुण्य कार्य नहीं कहे जा सकते। किसी व्यक्ति का लोभ व लालच के द्वारा धर्म परिवर्तन करना भी अधर्म व पाप का कार्य है। अपनी कमियों पर ध्यान न देना और उसे श्रेष्ठ मानना भी अमानवोचित कार्य है। असत्य, हिंसा, मांसाहार आदि भी उचित नहीं कहे जा सकते। ईश्वर सब प्राणियों का माता व पिता के समान है। वह अपनी ही सन्तान पशु व पक्षियों की हत्या की किसी भी हाल में आज्ञा व अनुमति नहीं दे सकता। ऐसा करना सदा से पाप रहा है और सदा रहेगा और ईश्वर की व्यवस्था से दण्डनीय भी होगा। अतः समाज को अपनी सोच को बदलने की आवश्यकता है। जब तक संसार के लोग, मुख्यतः मत-मतानतरों के मानने वालों की सोच नहीं बदलेगी, वह सत्य पर स्थित व स्थिर नहीं होगी, संसार में कभी शान्ति व सुख का वातावरण नहीं बन सकता। इस मृग-मरीचिका में जीना विचारशील मनुष्यों को छोड़ देना चाहिये और सत्य पर विचार करके मानव जाति के हित में कठोर निर्णय करने चाहिये जिससे हमारा आज व कल सुरक्षित रह सकें। आज ऐसा देखा जा रहा है कि कुछ सामाजिक एवं राजनीतिक दल अपने वर्तमान के हित व स्वार्थों के लिए देश व समाज के दूरगामी हितों की उपेक्षा कर उनसे खिलवाड़ कर रहे हैं। समाज में इसके प्रति जो चिन्ता होनी चाहिये वह देखने को नहीं मिल रही है। इससे देश का भविष्य भी भयावह प्रतीत होता है। समाज के अग्रणीय लोगों को सभी समस्याओं पर विचार कर उनका समाधान करना चाहिये। अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि इसके लिए मानव को श्रेष्ठ व सुसंस्कारित मानव बनाना होगा जो कि हमें लगता है कि वैदिक संस्कारों व वेदों के स्वाध्याय व वेदेानुसार कर्मों व आचरणों को करके ही बन सकता है। हमारे समान वैदिक शिक्षाओं के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, आचार्य चाणक्य, महर्षि दयानन्द एवं सभी ऋषि-मुनि हैं। इनके आदर्श जीवन से भी प्रेरणा ली जा सकती हैं। यह सभी युग पुरुष वैदिक संस्कृति की देन थे व देश व समाज के लिए आदर्श हैं। इन्हीं शब्दों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘संसार के सभी मनुष्य वा प्राणी ईश्वर की सन्तान’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ससार में तीन अनादि सत्तायें हैं जिनके नाम हैं ईश्वर, जीव व प्रकृति। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, अनादि, अजन्मा, नित्य, अविनाशी व अमर है। यह सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सृष्टिकर्ता है। सभी मनुष्यों व जीवात्माओं का एकमात्र उपासनीय ईश्वर ही हैं। माता, पिता व आचार्य भी उपासनीय हैं व हो सकते हैं परन्तु ईश्वर के समान नहीं। ईश्वर से हमें ज्ञान, बल व ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति होती है। वह हमें हर क्षण प्ररेणा करके बुरे कामों से दूर रहने व सदकर्मों को करने की शिक्षा देता है। हमारा शरीर हमें उसी का दिया हुआ है और हमारे पास जो ज्ञान व बल आदि शक्तियों हैं वह सब उसी की देन है जिसके लिए सभी मनुष्य व पशु, पक्षी आदि प्राणी उसके ऋणी है। एक प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने किसी को सुन्दर तो किसी को असुन्दर, किसी को बलवान तो किसी को दुर्बल, किसी को ऐश्वर्यशाली तो किसी को निर्धन, किसी को पुरुष और किसी को स्त्री तथा किन्हीं को पशु, पक्षी, जलचर, नभचर वा विभिन्न प्रकार के थलचर क्यों बनाया है? इसका उत्तर है कि ईश्वर ने जीवात्माओं को उनके पूर्व जन्म के कर्मानुसार शरीर प्रदान किये हैं जिससे वह पूर्व जन्मों के पाप व पुण्य कर्मों का फल भोग सके। जैसे जैसे उनके पाप कम होते जाते हैं और पुण्य बढ़ते जाते हैं, उनकी उन्नति होती जाती है। योग दर्शन के ऋषि पतंजलि कहते हैं कि हमारे इस जन्म तक के पाप-पुण्य कर्मों के आधार पर ही हमें आगामी जीवन में आयु, मनुष्य-पशु आदि जाति और सुख-दुःख रूपी भोग प्राप्त होते हैं। विचार करने पर यह सिद्धान्त पूरी तरह सत्य व युक्ति संगत लगता है। संसार में यह सर्वत्र घट रहा है अतः इसकी पुष्टि स्वतः हो रही है। खेद हैं कि संसार के बुद्धि जीवी कहे जाने वाले लोग भी इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते।

 परमात्मा ने मनुष्यों को एक सबसे विशेष चीज ‘‘वेद” ज्ञान दी है जिसमें उसके सभी कर्तव्यों का ज्ञान दिया गया है। इस ज्ञान को जान व समझ कर तथा इसके अनुरूप आचरण करने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सिद्ध व प्राप्त करता है। इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिए व जीवात्माओं को सुख देने के लिए ही ईश्वर ने यह सृष्टि रची है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह प्रातः सायं वेद की रीति से ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए सन्ध्या व अग्निहोत्र यज्ञों का पालन करें। यह दोनों कार्य सर्वाधिक पुण्यकारी हैं। इसे करने से ईश्वर प्रसन्न होता है और हमें उसका आशीर्वाद मिलता है जैसा कि संसार में पुत्र द्वारा पिता की आज्ञा पालन करने पर वह प्रसन्न होकर अपनी सन्तानों को आशीर्वाद और अपनी सुख सम्पदा से सम्पन्न किया करता है।

 महर्षि दयानन्द ने वेदों को सरल करके समझाने का प्रयास किया। उन्होंने समस्त वैदिक मान्यताओं को सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में प्रस्तुत कर हमारा कार्य बहुत ही सरल कर दिया है। हम सभी को इन सभी ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये और इसका आचरण भी करना चाहिये। यही हम सबका कर्तव्य है। वेद एवं सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से हम अपना सर्वांगीण कल्याण कर सकते हैं। इससे हमें उन्नति की प्रेरणा मिलती है और दिन प्रतिदिन हमारी बुद्धि की उन्नति होकर हमारी अविद्या का क्षय होता है। आज इतना ही। ओ३म् शम्।

यह भी हमें जानना है कि ईश्वर इस संसार को बनाने व सभी जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार जन्म देने से सबका माता, पिता, आचार्य, गुरु, राजा और न्यायायधीश है। सभी जीवात्मायें उसकी सन्तानों के समान हैं। सबको ईश्वर को माता-पिता मानकर उसकी वेदाज्ञाओं का पालन करना ही धर्म वा कर्तव्य है।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओे३म्**

**‘आर्य समाज आईडीपीएल-वीरभद्र-ऋषिकेश में यज्ञ एवं सत्संग’**

आज हमें ऋषिकेश की एक आर्यसमाज आईडीपीएल-वीरभद्र में आयोजित यज्ञ एवं सत्संग में सम्मिलित होने का अवसर मिला। अवसर था वहां समाज के एक वरिष्ठ सदस्य श्री गणेश नारायण माथुर का 82 वां जन्म दिवस। श्री माथुर ने ही आज के कार्यक्रम का आयोजन अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में किया था। इस अवसर पर समाज में गायत्री यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा थे आर्य वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम ज्वालापुर-हरिद्वार के आचार्य श्री कृष्णदेव जी। यज्ञ लगभग दो घण्टांे तक चला।

यज्ञ के बाद आचार्य जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए यज्ञ में जल सिंचन के चैथे मन्त्र **‘ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचसापतिर्वाचं नः स्वदतु।।’** की व्याख्या की। आचार्य कृष्ण देव जी ने कहा कि यदि प्रत्येक परिवार वेद मन्त्रों के भावों के अनुरूप अपने जीवन को ढाल लें तो उनके घर का वातावरण स्वर्ग जैसा हो जाये। उन्होंने कहा कि हमें यज्ञ को अपने जीवन में धारण कर उसे यज्ञमय बनाना है। जिस प्रकार हम बाह्य यज्ञ करते हैं उसी प्रकार ऐसा ही यज्ञ हमारे शरीर के भीतर भी होना चाहिये। उन्होंने कहा कि प्रभु देवों के भी देव हैं। हमारे पास जो भी वस्तुएं हैं वह सब ईश्वर की दी हुईं हैं। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी की चर्चा कर बताया कि वहां एक व्यक्ति ने त्रासदी से बचने के लिए यज्ञ आरम्भ किया तो न केवल उसके परिवार के सभी सदस्यों का जीवन ही बचा अपितु उसके घर की गाय आदि प्राणी भी बच गये थे। इसे उन्होंने यज्ञ का विशेष लाभ बताया और कहा कि यज्ञ से ऐसा वातवारण बनता है कि यज्ञ के आसपास के वायुमण्डल में विषैली गैसों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

आचार्य कृष्णदेव जी ने कहा कि प्रभु सबको रात दिन दे रहे हैं। पृथिवी में ईश्वर की दी हुई जीवनी शक्ति है। एक बीज बोने पर हमें हजारों दाने मिलते हैं। आचार्य जी ने चाणक्य का उल्लेख कर बताया कि वो घर श्मशान तुल्य होते हैं जहां यज्ञ नहीं होते वा जिन घरों से यज्ञ का धुआं न निकलता दीखे और वेद मन्त्र की ध्वनियां न सुनाई दें। उन्होंने कहा कि जिन घरों में यज्ञ होता है, स्वाहा व सु-आह की घ्वनियां निकलती हैं वह घर स्वर्ग होता है। उन्होंने कहा कि यदि आप अपने बच्चों व परिवार के सदस्यों को आर्यसमाज के सत्संग में ले जायेंगे तो उसका प्रभाव पड़ेगा। जिस घर से ईश्वर की आराधना निकल जाती है वह घर घर नहीं रहता। उन्होंने कहा कि भक्त भगवान से प्रार्थना करता है कि जैसा मैं यज्ञ बाहर कर रहा हूं वैसा ही यज्ञ मेरे भीतर भी होता रहे। माता पिता को अपनी सन्तानों को सन्ध्या व यज्ञ करने के संस्कार देने चाहिये। भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है कि प्रभु मेरी बुद्धि को पवित्र कर दो। जिसकी बुद्धि पवित्र हो जाती है उसको सुमति प्राप्त होती है। यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ प्रार्थना हुई व शान्ति पाठ भी किया गया। इसके बाद महिलाओं ने श्री माथुर के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बधाई के गीत गाये।

 यज्ञ के बाद भजनों का कार्यक्रम हुआ। भजनोपदेशक श्री देवी चन्द जी ने दो भजन प्रस्तुत किये। उनका एक भजन था **‘सृष्टि रचाने वाले, दुःख से बचाने वाले, दीनों को दो सहारा, मालिक है तू हमारा।’** श्री देवी चन्द जी के बाद देहरादून के ऋषि भक्त श्री उम्मेद सिंह आर्य जी ने भी भजन प्रस्तुत किये। भजनों के बाद आर्यसमाज के अधिकारियों ने श्री गणेश नारायण माथुर के आर्यसमाज को दी जाने वाली सेवाओं की पृथक पृथक चर्चा कर सराहना की। इसी के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। सभी आगन्तुकों के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज के विशाल परिसर में की गई थी। सभी ने भोजन किया और उसके बाद सभी अपने अपने निवासों की ओर लौट गये। देहरादून से श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री वैदिक साधन आश्रम तपोवन के नेतृत्व में आर्यसमाज के प्रधान श्री के.पी. सिंह जी, जिला प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शत्रुघ्न मौर्य जी, श्री ओम्प्रकाश मलिक, श्री महेन्द्र सिंह चैहान, श्री जितेन्द्र सिंह तोमर, मनमोहन कुमार आर्य आदि अनेक लोग सम्मिलित हुए। अन्य स्थानों से भी लोग इस आयोजन में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**